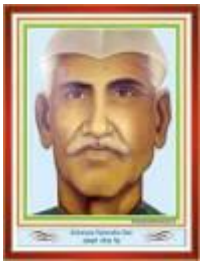

आचार्य नरेन्द्र देव

हिंदी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, पाली, प्राकृत और बांग्ला सहित अनेक भाषा के ज्ञाता आचार्य नरेन्द्र देव का जन्म सीतापुर, उत्तर प्रदेश में 31 अक्तूबर, 1889 को हुआ | उनके पिता बलदेव प्रसाद अपने समय के बड़े वकीलों में से एक थे | अल्पायु में ही उन्होंने रामचरितमानस, भगवद्गीता, महाभारत जैसे ग्रंथों का अध्ययन घर पर ही कर लिया था | वे प्रयाग विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. तथा वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत फैजाबाद में वकालत करने लगे थे |

नरेन्द्र देव जी ने इतिहास, राजनीति, समाजशास्त्र आदि साहित्येतर विषयों पर ही कलम चलाई लेकिन उनका लेखन साहित्यिक तत्वों से भरपूर था | हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही | वे हिंदी भाषा और साहित्य को राष्ट्रीय पद दिलाना चाहते थे | वर्ष 1913 में 'मर्यादा' में 'हमारा हिंदी के प्रति कर्तव्य' शीर्षक से एक लेख लिखा | इसमें उन्होंने हिंदी प्रेमियों से भाषा को देशव्यापी बनाने के लिए देशी भाषाओं के समान हिंदी साहित्य के भंडार को भी समृद्ध करने का आह्वान किया | वे राष्ट्रीय एकता के लिए भारतीय भाषाओं में मेल की प्रक्रिया को तेज करना चाहते थे | उन्होंने हिंदी भाषा-विषयों को उदार और व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की सलाह दी | उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य को भारत के विभिन्न साहित्य को आत्मसात करके उत्तर-दक्षिण का भेद मिटा देना चाहिए |

असहयोग आंदोलन के शुरू होने पर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए उन्होंने वकालत छोड़ दी थी | विलक्षण प्रतिभा और व्यक्तित्व के स्वामी आचार्य नरेन्द्र देव अध्यापक के रूप में उच्च कोटि के निष्ठावान अध्यापक और महान शिक्षाविद थे | वर्ष 1921 में वे काशी विद्यापीठ में अध्यापक और बाद में आचार्य तथा कुलपति बने | उनकी बौद्धिक प्रखरता और पाण्डित्य से प्रभावित उनके एक साथी श्रीप्रकाश ने उन्हें आचार्य से संबोधन शुरू किया, जो बाद में उनके नाम के साथ यह विशेषण लोकप्रिय हुआ |

वर्ष 1930 के नमक सत्याग्रह, 1932 के आंदोलन तथा 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया और जेल की यातनाएं सहीं | क्रांतिकारी दल के सदस्य न होते हुए भी उनके कई नेताओं से नरेन्द्र देव जी का घनिष्ठ संपर्क रहा | कांतिकारी समय-समय पर उनसे सहायता लेते थे और विदेशों से आने वाला साहित्य ले जाते थे और अपने समाचार देते थे |

स्वामी रामतीर्थ, विवेकानंद, मदनमोहन मालवीय, तिलक, गांधी और नेहरू जैसे महापुरुषों का व्यक्तित्व और कृतित्व का प्रभाव नरेन्द्र देव पर पड़ा | लेकिन इतिहास, दर्शन, समाजशास्त्र, राजनीति, संस्कृति, भाषा आदि के संदर्भ में उनकी अपनी ही विशिष्ट सोच थी | उन्होंने किसी भी प्रचलित वाद का अंधानुकरण नहीं किया | उन्होंने भारतीय परिवेश के अनुकूल सामयिक समस्याओं के समाधान के लिए एक नई राह तलाशने की कोशिश की | वर्ष 1934 में उन्होंने जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया तथा अन्य सहयोगियों के साथ कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की | वे जनवाणी, संघर्ष, जनता, समाज आदि पत्रिकाओं के संपादन-प्रकाशन के दायित्व से भी जुड़े रहे |

उनकी प्रमुख रचनाएं हैं -

राष्ट्रीयता और समाजवाद, समाजवाद - लक्ष्य तथा साधन, सोशलिस्ट पार्टी और मार्क्सवाद, भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास, युद्ध और भारत, किसानों का सवाल आदि |

उनका निधन 19 फरवरी, 1956 में हुआ |

.....